# नित्यानन्द आरती

ध्रुवपद

जय जय आरती नित्यानन्दा
सगुण रूपी गोविन्दा
जय जय आरती नित्यानन्दा

इस आरती के साथ नित्यानन्द की जय-जय।
आप श्रीगोविन्द के सगुण रूप हैं।
इस आरती के साथ नित्यानन्द की जय-जय।

पद १

प्रथम दत्तरूप घेसी
द्वितीय श्रीपाद होसी
तृतीय नरहरी होसी
गाणगापुरी लीला दाविसी

सर्वप्रथम आपने श्रीदत्त का रूप धारण किया।
आपका द्वितीय रूप श्रीपाद का हुआ।
आपका तृतीय रूप नरहरि था
और गाणगापुर में आपने अपनी दिव्य लीला दिखाई।

पद २

माणिकप्रभु तू होसी
अक्कलकोट स्वामी होसी
शिरडी साईनाथ होसी
कलियुगी नित्यानन्द बनसी

आप माणिकप्रभु भी थे,
आप अक्कलकोट स्वामी थे व शिरडी के साईनाथ भी थे
और कलियुग में आप श्रीनित्यानन्द हैं।

पद ३

ऐसी अनेक रूपे तू घेसी
गणेशपुरी तू वससी
भक्तांची इच्छा पुरविसी
बाळांना बहु आवडसी

इस प्रकार आपने असंख्य रूप धारण किए हैं
और अपने भक्तों की कामनाओं को पूर्ण करने के लिए
आप गणेशपुरी आकर बस गए।
आप बालकों को बहुत प्रिय हैं।

डिज़ाइन व अंग्रेज़ी भाषान्तर © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।